

### श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा

हे मुनिसुव्रत, मेरे भगवन सिद्धालय के वासी हो। आह्वान करु आओ जिन, मम हृदय कमल विश्वासी हो।  
भावों के पीले पुष्पो से बुला रहा हूं आजाओ। कर्म शत्रु भी शांत हुए हैं, शीघ्र हृदय में बस जाओ।  
मैं हूं भक्त आपका सच्चा, आप मेरे सच्चे भगवान। मेरी दुनिया छोटी सी है, रखना मेरा भगवन ध्यान।  
हृदयांगन में करु प्रतीक्षा, बोलो ना कब आओगे। आशा है, विश्वास पूर्ण है, नाथ मेरे गृह आओगे ।

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् अह्वानां।**

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थपनं।**

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।**

जग में जनम लेकर अनन्तो बार में मरता रहा, जब आपका वैभव लखा तो देखता ही में रहा।  
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।**

स्पर्शित किया चंदन बहुत पर ताप मिट पाया नहीं, गंगांब मुक्ताहार शीतल काम कुछ आया नहीं।  
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।**

नश्वर सुखो की कामना मे शिव भवन ना पासका, परभाग में अटकारु नाहूं, आत्म पद ना पा सका।  
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।**

यह चाह विषयों की मिटा दो, पुष्प अरपड है प्रभु, दुश कर्म का निदा यही है, काम को नाशो प्रभु।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।**

चिरकाल से जड़ वस्तु में स्वाद आया है प्रभु, निजज्ञान रस का स्वाद अब तक जान ना पाया प्रभु।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

दीपक शिखा से तम मिटेगा भ्रम रहा मेरा प्रभु। तम हारणी वो ज्ञान छनी दूर तम करती भी हो।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।**

प्रभु आपके ही ज्ञान घट में ध्यान दूष सुगंध है, मन पास दूष सुगंध बिन, गंध आप अनूप है।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।**

चिरकाल से इंद्रिये सुखो के फल रहा मैं चाहता, प्रभु दरश जो मैंने किया है, निज आत्म सुख फल चाहता।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।**

निज आत्म वैभव का अतिशय नाथ बतला दीजिये, मम अर्घ को स्वीकार लो, प्रभु ज्ञान धार बहाईये।

हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिए, सब कष्ट बाधाएं मिटा, भव सिंधु पार उतारिए।

**ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनघ्र्यपदप्राप्तये अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।**

### पंचकल्याणक अष्टय

प्रभु आनत दिविसे आये, और राजग्रही मैं आये, प्रिष्णाशावन दुतिया दिन माँ पद्मा उरआये जिन।

56 कुमारियाँ आयी, अन्तापूर बजे बधाये, मा स्वप्न देख हर्षाये, नपराज सुमेत्र सुनाये।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्ण-द्वितीयायां गर्भमंगल-मंडिताय, श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख वदी तिथि आयी, बारस जनमे जिन राई, अभिषेक किया मैंरु पर, बस अर्ध निमेष में जाकर।

जो जन्म मरण से डरते, वे प्रभु की पूजा करते, मैं जामन मरण मिटाऊं, जन्मोत्सव आज मनाऊं।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण-दशम्यां जन्ममंगल-मंडिताय, श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख वदी दशमी थी प्रभु जाति स्मृति हुई थी, जब केशलोच कर लीना, सुर शीरोदधि में दीना

तेला कर दीक्षा धारी, थे संग सहस्र मुनि राही, इन्द्राणी चौक बनाया, दीक्षा-कल्याण मनाया।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण-दशम्यां तपोमंगल-मंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब प्रभू रहे छदमस्ता तब मौन रहे भगवंता, वैशाख वदी तिथि नवमी, हो गये पूर्ण प्रभू ज्ञानी,

चर्णों में कमल रचे हैं जब प्रभु विहार करे हैं गुण थाण सयोगी पाया ज्ञानोत्सव देव मनाया।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्ण-नवम्यां केवलज्ञान-मंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा बारस को प्रभू पाई सिद्धालय को जो हैं कपूर उड़ जाता त्यों प्रभू तन भी उड़ जाता

प्रभू सम्मोदाचल आए निज आत्म ध्यान लगाए हम भी शुभ बर्ग चढ़ाये और मुक्तिरमा को पाए

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-द्वादश्यां मोक्षमंगल-मंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

### यशगान

सूरज से नीरज खिले और स्वाति से सीप भव्यकमल तुम से खिले आओ हृदय समीप  
जै जै मुनिसुव्रत तीर्थकर भक्ती सुमन चढ़ता हूं है विशाल तव यश गाथा मैं पूर्ण नहीं कह सकता हूं  
शरण आपकी जो आता है कर्मों का ग्रह मिट जाता जन्म मरण के दुखों से वह पल में छुटकारा पाता  
प्रभु स्वयं में आप विराजे ज्ञान रहे हो सभी जहान भव्यजनों के कष्ट मिटाते सदा प्रभु जी आप महान  
गर्भ जन्म तप ज्ञान हुए है राज ग्रही में शुभ कल्याण उर्ध्व मध्य पाताल लोक में गूंजा प्रभु का यश जय गान  
रत्नत्रय आभूषण पहने जड़ आभूषण का क्या काम दोष अठारह रहित हुए हैं वस्त्र शस्त्र का ले शन नाम  
तीन लोक के स्वयं मुकुट हो स्वर्ण मुकुट का क्या है काम नाथ त्रिलोकी कहलाते हो फिर भी रहते हो निजधाम  
भक्त निहारे प्रभु आपको आप निहारे अपनी और आप हुए निर्मोही स्वामी अनंत गुण का कही न छोर  
धन्य आपकी वीत रागता नहीं भक्त को कुछ देते फिर भी भक्त शरण में आकर सब कुछ तुमसे पा लेते  
प्रभु आपके वचन श्रवण कर आत्म ज्ञान को पाते हैं रत्न ग्रह धारण कर साधक शिव पथ में लग जाते हैं  
चक्री इंद्राधिक के वैभव पुण्य सरीशे से मिलते नहीं चाते किंतु पुण्य को ज्ञानी निज में ही रहते  
काल अनंता बीत गया है मोह शनीचर सता रहा लाखों को प्रभु पार किया है भक्त हृदय यह बता रहा  
नाथ आपकी महिमा को मैं अल्पबुद्धि कैसे गाऊं यही भावना भाता हूं निज का निज में दर्शन पाऊं  
प्रभु भक्त मैं आपका दुख से हूं संयोग एक नजर कर दो प्रभु होऊ दुःखो से मुक्त  
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णाघ्र्य निर्वपामीति स्वाहा।  
मुनिसुव्रत स्वामी हो जग नामी भव भव का संताप हरो नित पूज रचाऊं ध्यान लगाऊं विद्या सागर पूर्ण करो

॥ इत्याशीर्वादः॥